नवकेतन कृत

२०

काला बाजार



रतन एण्ड को० बुकसेलर्स, दरीबा कलां, दिल्ली।

मूल्य ६ नये पैसे

काला बाजार के गाने

कलाकार—देवानन्द, वहीदा रहमान, नन्दा, विजय आनन्द
चेतन आनन्द,

गीत—शैलेन्द्र संगीत—एस० डी० बर्मन

गाना नं० १

रफी :—

सूरज के जैसी गोलाई
चँदा सी ठंडक भी पाई
ठनके तो प्यारे दुहाई
तेरी धूम हर कहीं
तुझसा यार कोई नहीं
हमको तो प्यारे तू सब से प्यारा। तेरी धूम०
दुनियाँ की गाड़ी का पहिया
तू चोर तू ही सिपहिया
राजों का राजा रुपईया ! तेरी धूम०
औरत के माथे का टीका
ठुमरी और कजरी से मीठा
तू राज है जिंदगी का। तेरी धूम०
बूढ़ों की तू है जवानी
बचपन की दिलकश कहानी
तेरे बिना दूध पानी। तेरी धूम०
दौलत का मजहब चलाके
हम एक मंदिर बनाके
पूजेंगे तुझको बिठोके। तेरी धूम०

गाना नं० २

(युगल गान : सुधा मलहोत्रा व गीतादत्त)

न मैं धन चाहूँ, न रतन चाहूँ,

तेरे चरणों की धूल मिल जाये.
तो मैं तर जाऊं ; श्याम तर जाऊं, हे राम तर जाऊं।
मोह मन मोह लोभ ललचाए,
कैसे कैसे ये नाग लहराए।
इससे पहले के दिल उधर जाय
मैं तो मर जाऊं—क्यूं न मर जाऊं।
लाए क्या थे जो लेके जाना है,
नेक दिल ही तेरा खजाना है।
साँझ होते ही पँछिया गाए,
अब तो घर जाऊं...अपने घर जाऊं।
थम गया पानी, जम गई काई,
बहती नदिया ही साफ कहलाई।
मेरे दिल ने ही जाल फहलाए,
अब किधर जाऊं—मैं किधर जाऊं।

गाना नं० ३

:—
अपनी तो हर आह एक तूफान है,
ऊपरवाला जानकर अनजान है।
अब तो हँस के अपनी भी किस्मत को चमका दे,
कानों में कुछ कह दे जो इस दिल को बहला दे,
ये भी मुश्किल है तो क्या आसान है। ऊपरवाला०
सर पे मेरे तू जो अपना हाथ ही रख दे
फिर तो भटके राही को मिल जायेंगे रस्ते
दिल की बस्ती बिन तेरे वीरान है। ऊपरवाला०
दिल ही तो है उसने शायद भूल भी की है
जिंदगी है भूलकर ही राह मिलती है
माफ कर बँदा भी एक इंसान है। ऊपरवाला०

गाना नं ४

(युगल गान : मन्ना डे-आशा)

साँझ ढली दिल की लगी थक चली पुकार के
आजा आजा आ भी जा—
क्या दूँ तुझे पहले से मैं बैठी हूँ दिल हार के
जा जा जा जा जा तू जा—
जिद पे आ गया है दिल के आज यूँ न लौटना,
मेरी सुनो लौट जाओ छोड़ दो ये बचपना,
चार दिन की जिन्दगी में दिन हैं दो बहार के
आजा आजा आ भी जा। क्या दूँ तुझे०
कैसे कहूँ कैसी उलझनों में मेरी जान है
हाँ को न समझ गये ये प्यार की जुबान है
काटने हैं हमको दिन किसी के इँतजार के—
जा जा जा जा जा तू जा। साँझ ढली०
सुन तो ले के मेरे दिल का तुझसे क्या सवाल है
कुछ न कर सकूँगी मैं इसी का तो मलाल है
दिल न तोड़ चाहे बोल दो ही बोल प्यार के
आजा आजा आ भी जा।
क्या दूँ तुझे पहले से मैं बैठी हूँ दिल हार के
जा जा जा जा जा तू जा। साँझ ढली०

गाना नं० ५

रफी :—

खोया खोया चाँद, खुला आसमान
आँखों में सारी रात जायेगी

तुमको भी कैसे नींद आयेगी। खोया०
मस्ती भरी, हवा जो चली,
खिल-खिल गई, ये दिल की कली।
मन की गली में है खलबली,
के उनको तो बुलाओ। खोया०
तारे चले, नजारे चले,
सँग—सँग मेरे वो सारे चले।
चारों तरफ इशारे चले,
किसी के तो हो जाओ। खोया०
ऐसी ही रात, भीगी सी रात,
हाथों में हाथ, होते वो साथ।
कह लेते उनसे, दिल की ये बात,
अब तो न सताओ। खोया०
हम मिट चले, जिन के लिए,
बिन कुछ कहे वो चुप चुप रहे।
कोई जरा ये उन से कहे
न ऐसे आजमाओ। खोया०

गाना नं० ६

आशा :—

सँभालो, सँभालो अपना दिल दिलवालो।
कह रहा है समाँ जादू भरा,
सोच मत क्या है अच्छा-बुरा,
अभी तो ये, अभी तो ये हुई है इब्तदा। सँभालो०
ना ये मेरी, ना ये मर्जी तेरी,
खुद नजर टकराती गई,

ये दिल्लगी, ये दिल्लगी भी क्या है दिल्लगी। सँभालो०
जो भी मेरा दीवाना हुआ,
खुद से वो बेगाना हुआ,
जो होना है सो हो रहेगा, सोचता है क्या। सँभालो०

गाना नं० ७

आशा :—

सच हुए सपने तेरे।
झूम ले ओ मन मेरे॥
बेकल मन का धीरज लेकर, मेरे साजन आये,
जैसे कोई सुबह का भूला, साँझ को घर आजाये।
प्रीत ने रँग बिखेरे। झूम ले०
मन की पायल छम-छम बोले, हर इक साँस तराना,
धीरे धीरे सीख लिया है, अँखियों ने मुस्काना।
हो गये दूर अँधेरे॥ झूम ले०
जिस उलझन ने दिल उलझाके, सारी रात जगाया,
बनी है वो आज प्रीत की माला, मन का मीत मिलाया।
जगमग साँझ—सवेरे॥ झूम ले०

॥ समाप्त ॥

श्री मनमोहन प्रिंटिंग प्रेस, १४५४ मालीवाड़ा, नई सड़क दिल्ली